निरल के कविताओ में प्रगतिवादी विचारधारा

-जड़ा.उषा रानी
हिंदी प्राद्यापिका,
डी.एसशासकीमहाविद्यालय,
ओंगोल, प्रकाशम् जिला/
आंध्रप्रदेश /

प्रगतिवाद की परिभाषा:

सन १९३५ के आसपास हिंदी में जिस काव्यधारा हुआ , वह 'प्रगतिवाद' कही जातीहै| इसके पीछे रूस के साम्यवाद की प्रेरणा थी राजनीति के क्षेत्र में जो चिंतन -पद्दति साम्यवाद कही जाती है अर्थनीति के क्षेत्र में जो साम्यवाद कही जाती है वही साहित्य के क्षेत्र में प्रगतिवाद कही जाती है|

प्रगतिवाद के तत्त्व – प्रगतिवाद के प्रधानतः दो तत्त्व है – कार्लमार्क्स का स

साम्यवाद तथा फ्रायड का यौनिवाद प्रगतिवाद के सामान्य तत्त्व इस प्रकार है-

१.रुढि का विरोध

२.शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति

३.पूंजीपति के प्रति ग्रुना

४.क्रांति का आह्वान

५.वेदना के विवृत्ति

६.उदबोधन , देश भक्त

निराला के काव्य अपरा में हम को प्रगतिवाद की सबल अभिव्यक्ति मिलती है; यथा –

१.रूढि का विरोध:

अपनी संस्कृति का दम्ब्र करनेवाले को ललकारते हुए निराला ने लिखा है|उसका वह रूढि का विरोध 'सरोज-स्मृति' में दिखाई देता है-

फिर सोचा -मेरे पुर्वजगण
गुजरे जिस राह, वही शोभन
होंगा मुझको , वह लोक रीति

-सरोज स्मृति

२.शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति :

शोषित और दुखी जनों के प्रति गहरी सहानभूति-प्रदर्शन प्रगती वाद का प्रतिपाद्य है | भिक्षुक, तोड़ती पत्थर और विधवा कविताएँ इस प्रवृति के सुंदर उदाहरण हैं ; यथा -

वह आता
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता
पेट पीठ दोनों मिला कर है एक,
चल रहा लकुटिया टेक |

- भिक्षुक

३. पूँजीपति के प्रति घृणा :

निराला ने अपने पैनी दृष्टी से समाज के सच्चे रूप को देखा था और अपने गरीब जीवन में उसीकी गरीबे को सहा था |इस विचारधारा के संदर्भ में उन्हेंने पूंजीपतियॉ को बार बार ललकाराहै –

भेद कुल खुल जाय वह सूरत हमारे दिल में है |
देश को मिल जाय जो पुंजी तुम्हारी मिल में है |

-सहस्राब्धि

४.क्रांति का आहवान:

समाज के शोषण का अंत करने के लिए प्रगतिवादी कावी क्रांति का आहवान करता है |निराला अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए 'श्यामा'से प्रलय कारी नृत्य का आह्वान करते है-

एक बार बस और नाच तू श्यामा
सामान सभी तैयार ,
कितने ही है असुर ,चाहिये कितने तुमको हार !
कर मक्ला मुंड मालाओं के बल पर मन – अभिराम
एक बार बस और नाच तू श्यामा

- श्यामा

५.वेदना और निराला :

सामाजिक विषमताओं को देखकर कवि निराला का मन दुःख हो जाता है | उसके मन में वेदना और निराशा के भाव भर जाते है |अपरा में व्यक्तिपार्क वेदना और निराशा का आधिक्य है | 'स्नेह निर्झर बह गया है' कविताएँ इसी प्रकार की है –

स्नेह निझेर बह गया है'
रेत ज्यों तन रह गया है
आम की वह डाल जो सूखी दिखी
नहीं आते, पंक्ति में वह हूँ लिखी,
नहीं जिसका अर्थ
जीवन रह गया है |

६.उदबोधन,देश भक्ति ,सामाजिक कल्याण के भाव:

प्रगति वादी कवि क्रांतिकारी होता है | जागो एक बार ,जगा दिखा ज्ञान,छत्रपति शिवाजी का एक पात्र आदि |

उनका कहना है कि केवल अशक्त प्राणी ही अत्याचार सहन करते है |इसके साथ ही वह हमारी आपस की फूट की ओर संकेत करते हुए उसे दूर करने की सलाह देता है |

व्यक्तिगत भेद ने
छीन ली हमारी शक्ति |

उपसंहार:

दिये गए आधार पर सरलता पूर्वक कहे सकते है कि निराला प्रणीत काव्य 'अपरा' में प्रगतिवाद की समस्त प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं |